वार्षिक रिपोर्ट
2016-17

अमन उत्तराखण्ड
www.amanuttarakhand.org

वार्षिक रिपोर्ट 2016

आमुख

उत्तराखण्ड के ग्रामीण समुदाय, दानदाता व सहयोगी संस्थाओं व शुभचिंतकों के सम्मिलित प्रयासों से अमन ट्रस्ट सामाजिक क्षेत्र में कार्य करते हुए 16 वर्श पूरे करने जा रहा है। एक अलाभकारी स्वैच्छिक संस्था के रूप में 1999 से काम करते हुए अमन पारिस्थितकीय बाल अधिकारों, षिक्षा, ग्रामीण आजीविका संवर्धन, आपदा प्रबंधन, जैसे मुद्दों के साथ कार्य करते हुए संस्था ने व्यापक समर्थन हासिल किया है और अपने कार्यों में हमें संतोशजनक सफलताएं भी अर्जित हुई। सीमित आर्थिक एवं मानव संसाधनों के बाद भी समाज के सहयोग से हम अपने कार्यों को निरंतरता से आगे बढ़ा रहे हैं। इस वर्श मूल्यांकन में समुदाय की भागीदारी, कार्यों के प्रभाव और सामाजिक परिवर्तनों का सूक्ष्म विष्लेशण भी किया गया, जिसपर मूल्यांकनकर्ताओं का संतोश हमारे लिए बड़ा प्रोत्साहन था। गत वर्श संस्था द्वारा जमीनी स्तर पर अल्मोड़ा जिले के चौखुटिया व हबालबाग ब्लॉक के गॉव में बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य, पारिस्थितिकीय बाल अधिकारों पर काम करते हुए ग्रामीण समुदाय के पलायन को कम करने के लिए कृशि आधारित जिन कार्यक्रमों को संचालित किया था, इस वर्श उनकों गति प्रदान की गई और अनेक स्थानों पर काम का प्रतिफल भी दृश्टिगोचर हुआ। साझे प्रयासों के साथ आगे बढ़ने की हमारी दृश्टि ने हमे प्रदेष के विभिन्न सामाजिक संगठनों व समूहों से जोड़ा और राज्य के विभिन्न भागों में षिक्षा, स्वास्थ्य, जागरूकता आदि में हमने साझे प्रयासों से समाज तक पहुंच बनाई। सहभागी सामाजिक विकास के लिए पारिस्थितकीय बाल अधिकारों के लिए जागरूकता , महिला षक्ति को आगे बढ़ाना, कृशि को प्रोत्साहन व पर्यावरण संरक्षण जैसे कार्य इस वर्श के केन्द्र में रहे, इसके अतिरिक्त जल संरक्षण, संवर्धन, जैविक खेती, ग्रामीण आजीविका संवर्धन आदि क्षेत्रों में भी अनेक सफलताएं अर्जित हुई। हम उन सभी साथियों, संगठनों व लोगों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं, जिनके सहयोग व समर्थन से हम समाज कार्य की इस द्वीप को सतत् जलाने का प्रयास कर रहे हैं।

रघु तिवारी
(प्रबंध न्यासी)

परिचय

हमारे के बारे में

सामाजिक क्षेत्र में कार्य करते हुए हम अब दो दषक पूरे करने जा रहे हैं। एक निर्लाभ स्वायत्त संगठन के रूप में अमन संस्था ने बीते 19 वर्शो में विभिन्न सामाजिक विशयों पर काम किया। हमारा ध्येय रहा है कि, सामुदायिक प्रयासों और सहभागिता से सामाजिक विकास गति को तेज किया जाए। अमन ने समतामूलक समाज की स्थापना का लक्ष्य लेकर अपनी यात्रा षुरू की । इसके लिए षैक्षणिक हस्तक्षेप को अपनी रणनीति बनाकर संस्था ने अपने कार्य को आगे बढ़ाया है। सभी सामाजिक वर्गों के साथ काम करते हुए विषेशकर महिलाओं, दलितों, बच्चों व कमजोर वर्गों को अपने कार्यों के केन्द्र मे रखा है। समाजिक व षैक्षणिक विकास के लिए प्रतिबद्ध सहयोगियों द्वारा 1995 में अमन संस्था का प्रारंभ किया गया। औपचारिकताओं के साथ वर्श 1999 में ही हमने विधिवत अपना काम भी षुरू कर दिया था। अपनी स्थापना के बाद से ही अमन निरंतर स्वंयसेवी संगठनों, उनके कार्यकर्ताओं के साथ भी षिक्षण, प्रषिक्षण आदि माध्यमों से बाल अधिकार, पारिस्थितिकी, पर्यावरण, षिक्षा, ग्रामीण विकास, महिला सषक्तीकरण के मुद्दों का व्यापक सोच बनाने का काम कर रहा है।

उद्देष्य

अमन के प्रमुख उद्देष्य निम्नलिखित हैं–

- प्राकृतिक संसाधनों के प्रबंधन पर आम जन की भागीदारी और नियंत्रण को बढावा।
- समाजिक आर्थिक असमानता को कम करने के लिए वंचित/पिछड़े/कमजोर को आर्थिक रूप से स्वावलंबी बनाना।
- बाल अधिकारों पर समाज की संवेदनषीलता विकसित कर बाल अधिकारों को संरक्षण एवं बढ़ावा।
- महिलाओं का सामाजिक एवं राजनीतिक विकास, सहभागिता और हस्तक्षेप को बढ़ावा तथा लैंगिक भेद और गैरबराबरी को कम करना तथा महिला अधिकारों को संरक्षण।
- वैष्वीकरण एवं उदारीकरण के प्रभावों पर चेतना का विकास करना।

रणनीति एवं हस्तक्षेप

सामाजिक एवं षैक्षणिक विकास के लिए षैक्षणिक हस्तक्षेप के द्वारा संस्था सामाजिक एवं ग्रामीण विकास की प्रक्रिया को गति प्रदान करते हुए अपनी गतिविधियां संचालित करती है।

हमारे प्रमुख कार्यों में दीर्घकालीक लक्ष्य लेते हुए संस्था समुदाय के पारिस्थितिकीय अधिकारों को सुनिष्चित करने, प्राकृतिक संसाधनों पर सामुदायिक के अधिकारों को स्थापित करने, महिला अधिकार, बाल अधिकार, आजीविका संवर्धन, कृशि व ग्रामीण विकास, षिक्षा व स्वास्थ्य व स्वच्छता आदि विशयों पर काम करती है।

इस कार्य को आगे बढ़ाने के लिए अभियान, शैक्षिक हस्तक्षेप , सूचनाओं का प्रसार, समान विचार वाले

संगठनों के साथ समन्वय एवं संयोजन कर लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कार्य किया जाता है।
विभिन्न व्यापक सामाजिक हितों पर आधारित मुद्दों के लिए साझा प्रयासों को भी बल दिया जाता है।

कार्यक्षेत्र

अमन द्वारा देहरादून, नैनीताल और अल्मोड़ा जनपद के 40 गांवों में सघन कार्य किया जा रहा है। अल्मोड़ा में विकासखण्ड चौखुटिया के 20 गांवों व हवालबाग विकासखण्ड के 8 गांवों तथा नैनीताल के 7 गांवों में सामुदायिक स्थाई विकास की गतिविधियों को जमीनी स्तर पर कार्यकर्ताओं व सहयोगी संग. ठनों के माध्यम से संचालित किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त राज्य व देश स्तर पर विभिन्न विशयों पर आधारित नेटवर्क तथा सामुदायिक संगठनों के द्वारा व सहयोग से भी विभिन्न कार्य संपन्न किए जा रहे हैं तथा विभिन्न नीतियों में सलाहकार की भूमिका निभाई जाती है और अनेक विशयों में संस्था सीधे कार्य करती है।

गतिविधियां वर्ष २०१६-१७

संस्था सामुदायिक संगठनों के द्वारा अपनी गतिविधियों का संचालन करती है। इसमें बाल संगठन, महिला संगठन, यूथ क्लब, बीज उत्पादन समिति, ग्रीन क्लब शामिल है। जो नीति निर्माण में सहभागी बनकर संस्था के विचारों, कार्यक्रम, और गतिविधियों को धरातल तक ले लाकर लक्ष्य प्राप्ति की ओर अग्रसर हैं।

महिला सषक्तिकरण

संस्था द्वारा प्रत्येक गांव में गठित व सतत् प्रषिक्षित महिला संगठन महिला सषक्तिकरण के लिए प्रतिबद्ध हैं। विभिन्न गतिविधियों के द्वारा महिलाओं की अधिकारों के प्रति चेतना बढ़ाने के साथ उन्हें राजनीतिक व सामाजिक प्रक्रियाओं में उन्हें भागीदार बनाया जाता है। वर्तमान में क्षेत्र में 10 महिला संगठनों का गठन किया गया। 2016 अप्रैल से मार्च 2017 तक महिला संगठनों की कई मासिक व अन्य बैठकें संपन्न हुई तथा कई नए सदस्य महिला संगठनों में सदस्य बनें वृहद संख्या में महिलाओं ने इन कार्यक्रमों व गतिविधियों में भागीदारी की। इस वर्श भी क्षेत्र में वन संरक्षण, पौधरोपण, महिला स्वास्थ्य जागरूकता, जल संरक्षण, जैविक खेती, स्थानीय स्वशासन, महिला सशक्तिकरण कार्यक्रमों, कंपोस्ट पिट निर्माण, बायोगैस, जल संरक्षण, सौर उपकरणों का प्रयोग, आदि के उपयोग और वितरण के कार्यक्रम इस दौरान संचालित किए गए। अंतर्राश्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर महिलाओं ने 13 मार्च 2017 को पंचायत

भवन तड़ागताल में एक सम्मेलन किया। महिला शिक्षा और गांवों के लिए गुणवत्ता पूर्ण शि क्षा विशय पर इस मौके पर चर्चा आयोजित की गई जिसमें महिलाओं ने एक हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन भी मुख्यमंत्री के नाम भेजा।

15 से 17 नवम्बर 2015 को अल्मोड़ा में महिला नेतृत्व सुदृढ़ीकरण कार्यशाला आयोजित की

गई जिसमें महिलाएं और उनके पारिस्थितिकीय अधिकारों पर उन्हें जानकारी दी। क्षेत्र में आज 286 महिलाएं सक्रिय रूप से 10 महिला संगठनों के साथ मिलकर कार्य कर रही है। पर्यावरण संरक्षण, जैविक खेती, जल संरक्षण व प्रदूशण, स्थानीय स्वशासन में महिलाओं की भूमिका, पौधरोपण, बीज बचाना, महिला सशक्तिकरण आदि विशय भी इन महिला संगठनों के विमर्ष और हस्तक्षेप में षामिल है।

महिला नेतृत्व का विकास

महिला संगठनों में महिला नेतृत्व का विकास करने और नेतृत्व पर समझ विकसित करने के लिए 15 से 17 नवम्बर तक अल्मोड़ा में 26 महिलाओं का एक प्रशिक्षण कार्यक्रम किया गया।

पारिस्थितिकीय तंत्र का समझने और सूक्ष्म स्तर पर गांव की पारिस्थितिकी को जानने, इसमें सामूहिक समझ विकसित करने, जल, जंगल और खेती के संरक्षण जैसे विशयों पर दृश्टिकोण स्पश्ट करने के उद्देश्य से यह कार्यशाला आयोजित की गई।

बालअधिकार

पारिस्थितिकीय बाल अधिकार

पारिस्थितिकीय अधिकारों को हर बच्चे का प्राथमिक अधिकार मानते हुए अमन ने विगत वर्शों में बच्चों, युवाओं, महिलाओं और समुदाय के साथ पारिस्थितिकीय बाल अधिकारों पर जानकारी और जागरूकता के लिए सघनता से काम किया ताकि हर बच्चे के पारिस्थितिकीय अधिकारों को सुनिष्चित किया जा सके। इसी क्रम में वर्श 2016–17 में निम्न गतिविधियां संपादित की गई।

पारिस्थितिकीय अध्ययन केंद्र

चौखुटिया विकासखण्ड के 10 गांवों में चल रहे पारिस्थितिकीय अध्ययन केंद्रों के द्वारा बच्चों को स्थानीय परिवेष और पारिस्थितिकीय तंत्र से परिचित कराने के साथ–साथ उनकी पर्यावरणीय चेतना को भी विकसित करने का कार्य इस वर्श भी जारी रहा। बच्चों की रचनात्मकता को विकसित करते हुए उन्हें स्थानीय परितंत्र के प्रति जागरूक करने के लिए इस वर्श नए प्रयास किए गए।
इसी का परिणाम है कि बच्चे परितंत्र के स्थानीय खतरों को पहचान कर उनके निदान की पहल कर रहे हैं। वृक्षारोपण, प्लास्टिक उन्मूलन, जल संरक्षण, जैविक व अजैविक कूड़ा निस्तारण, व्यक्गित स्वच्छता, पेयजल स्वच्छता आदि अभियानों को भी वे इसी प्रभाव में संचालित करते हैं।

ग्रीन क्लब

अमन द्वारा युवाओं को पर्यावरणीय सरोकारों से जोड़ने के लिए गठित किए गए ग्रीन क्ब्ब सतत् अपने कार्यों में संलग्न है। गांवों में 9 से 18 साल तक के बच्चे इन क्लबों से जुड़े

हैं। पर्यावरण, परिवेश, परिस्थितिकीय तंत्र व पारिस्थितिकीय बाल अधिकारों जैसे विशयों पर जानकारी विकसित करने का काम करते हैं। युवाओं को पर्यावरणीय विशयों से जोड़ने के साथ ही स्थानीय पर्यावरण, पारिस्थितीय संकटों पर विमर्ष और उनके निदान की पहल भी इन ग्रीन क्लबों द्वारा की जा रही है। उद्देश्य से विभिन्न 10 गांवों में 10 ग्रीन क्लब सुचारू संचालित हो रहे हैं। 10 से 20 वर्श के युवा इन क्लबों से जुड़े हैं।

गतिविधियां

29 से 31 मई 2016 को दिषा षिक्षण संस्थान चौखुटिया में आयोजित ग्रीन क्लब कार्यषाला में 51 प्रतिभागी सम्मिलित हुए। ग्रीन क्लब कार्यों का आदान प्रदान, बाल अधिकारों व पारिस्थितिकीय तंत्र में समझदारी विकसित करने, तथा जे जे एक्ट तथा बाल यौन हिंसा कानून की जानकारी युवाओं को दी गई।

21 अगस्त को ग्रीन क्लब सम्मेलन में 240 सदस्यों ने भागीदारी की। ग्रीन क्लब सदस्यों ने इस मौके पर अपने अपने गॉवों की गतिविधियों की रिपोर्ट प्रस्तुत की तथा अपनी अपनी प्रस्तुतियां भी दी। 48 नए सदस्यों ग्रीन क्लब में सम्मिलित हुए। इस काल में ग्रीन क्लबों में अधिक सक्रीयता देखी गई तथा इसकी बैठकों में युवाओं की औसत भागीदारी भी 80 प्रतिषत तक पहुंची। इस वर्श विभिन्न विशयों पर युवा अधिक मुखर दिखे। बाल अधिकारों, यौन अपराधों, प्राकृतिक संरक्षण, बाल षिक्षा, स्वास्थ्य, रचनात्मकता वृद्धि, बाल अधिकारों आदि विशयों पर बच्चों ने विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए। 10 ग्रीन क्लब से जुड़े बच्चों ने इस वर्श अपने जन्मदिवस पर पौधरोपण किया।

ग्रामीण क्षेत्रों में 10 ग्रीन क्लबों ने कूड़ा निस्तारण के लिए अजैविक कूड़ों के छोटे पिट बनाए और ग्रामीण क्षेत्रों में घर घर जाकर इस प्रकार के कूड़े के पिट बनाने का आहवाहन किया।

ग्रीन क्लब के 155 युवाओं ने क्षेत्र के 8 प्राकृतिक जल स्रोत्तों की सफाई की।

क्षेत्र के 10 गांवों के 29 युवाओं ने मिलजुलकर अपने बाल अखबार *''अपनी दुनिया''* के लिए

कार्य करने का संकल्प भी लिया और पर्यावरणीय मुददों पर काम करने का निर्णय लिया। इसके लिए उन्हें समय समय पर प्रशिक्षण भी दिया गया है।

जुकानी, कोट्यूड़ा, खीड़ा, न्योंनी, कोट्यूड़ा, खीड़ा, प्रेमपुरी, रामपुर, धनाड़, और ड्योंनी, आदि गांवों में बच्चें आपस में मिलकर नियमित उपयोग के बाद प्लास्टिक और पॉलीथीन का खुद निस्तारण करते हैं। वे अपनी आदतों और व्यवहार में परिवर्तन लाने के साथ साथ इस चेतना को समुदाय तक पहुंचाने के वाहक भी बन रहे हैं।

दौलाघट क्षेत्र में भी संचालित कार्यक्रमों में बाल संगठन सक्रिय रूप से काम करते हुए बाल अधिकारों, स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, स्वास्थ्य जागरूकता, पौधारोपण जैसे विशयों पर समय समय पर विभिन्न गतिविधियां आयोजित करते हैं।

ग्लोबल एक्षन मंथ हर वर्श नवम्बर माह में संचालित होने वाला ग्लोबल एक्षन मंथ कार्यक्रम में इस वर्श गो ग्रीन अभियान चौखुटिया विकासखण्ड में चलाया गया। पारिस्थितिकीय बाल अधिकारों पर केंद्रित इस अभियान में क्षेत्र के 25 गॉवों के 300 से अधिक बच्चों ने भाग लिया और क्षेत्र में एक जागरूकता रैली भी निकाली। इस अवसर पर लगाई गई प्रदर्षिनी में बच्चों ने पारिस्थितिकी, बाल अधिकार और पर्यावरण को लेकर अपनी समझ का प्रदर्षन किया और चार्ट तथा मॉडलों से अच्छे पर्यावरण के लिए विकास मॉडलों को प्रस्तुत भी किया।

रेड हैण्ड कैंपेन

विष्व में विभिन्न तनावग्रस्त देषों में बच्चों को युद्ध व हिंसा में प्रयोग किए जाने के विरोध में चलाए गए रेड हैण्ड केंपेन में चौखुटिया क्षेत्र में सैकड़ों बच्चों ने भाग लिया। यूनाइटेड नेषन के इस प्रोटोकॉल से जुड़े इस अभियान से खुद को

जोड़ते हुए जूनियर हाईस्कूल गोदी में 200 से अधिक छात्र छात्राओं ने 12 फरवरी 2017 को एकत्र होकर एक वृहद गोश्ठी की तथा एक बड़े बैनर में लाल हाथों की छाप देकर और हस्ताक्षर कर दुनिया भर में बच्चों के भविश्य के साथ किए जा रहे इस खिलवाड़ को रोकने की मांग की। बच्चों ने इस बात पर रोश जताया कि दुनियां भर में आतंकवाद, अंर्तराज्यीय तनावों व अनेक स्थानों पर सेना आदि द्वारा विद्राह आदि में बच्चों को युद्ध क्षेत्र में प्रयोग किया जा रहा है तथा लाखों लाख बच्चे जिसमें लड़कियां और लड़के इसके षिकार हो रहे हैं।

वष्व खेल दिवस

खेल को हर बच्चे के विकास का मुख्य आधार व अधिकार मानते हुए इसे प्रोत्साहित करने के उद्देष्य से 28 मई 2017 को विष्व खेल दिवस आयोजित किया गया। चौखुटिया ब्लॉक में 6 से 18 वर्श के 72 बच्चों जिसमें 37 बालिकाएं थी ने इसमें भाग लिया। जूनियर हाईस्कूल गोदी के फील्ड में बच्चों ने विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग किया तथा गीत, रचनात्मकता और सृजनषीलता से जुड़े अनेक खेलों का इस अवसर पर आयोजन किया गया तथा बच्चों को पुरस्कार भी दिए गए। इसी अभियान को आगे बढ़ाते हुए 29 मई को दौलाघट क्षेत्र में भी एक वृहद खेल प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें 150 से अधिक ग्रामीण बालिक बालिकाओं ने बढ़चढ़कर खो–खो, कब्ड्डी, दौड़, चम्मच दौड़, रस्सीकूद, चित्रकला आदि प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग किया। ग्रामीण बच्चों विषेशकर बालिकाओं को खेल से जोड़ने और उनमें आत्मविष्वास पैदा करने में यह प्रतियोगिताऐं अत्यंत सहायक सिद्ध हो रही है। लगभग 1 माह पूर्व ग्रामीण बच्चे इन ब्लॉक स्तरीय प्रतियोगिताओं में जुट जाते हैं। गॉव स्तर अपने केंद्रों पर वे इन प्रतियोगिताओं में भाग लेते हैं तथा सफल प्रतिभागी खेल दिवस पर आयोजित वृहद प्रतियोगिता का हिस्सा बनते हैं। अकेले चौखुटिया विकासखण्ड में मई माह में गॉव स्तर पर 302 बच्चों जिसमें 160 बालिकाएं सम्मलित थी ने इस प्रतियोगिओं में भाग लिया।

वृक्ष मित्र अभियान

बच्चों में पर्यावरणीय संवेदना विकसित करने वाला वृक्ष मित्र अभियान इस वर्श भी वृहद स्तर पर किया गया। चौखुटिया व हवालबाग विकास खण्डों के दो सौ से अधिक गॉवों की परिधि में 11 स्कूलों में बच्चों की कार्यषालाएं आयोजित कर उन्हें इस अभियान से जोड़ा गया। बच्चों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में पेड़ व प्रकृति के महत्व व उपयोग पर अपनी अभिव्यक्ति दी। बच्चों ने वृक्षों का मित्र बनकर उन्हें आजीवन सहयोग करने व बचाने के संकल्प पत्र भरे। 1506 बच्चों ने इस अभियान में सक्रिय रूप से भाग लिया।

उत्तराखण्ड यूथ नेटवर्क

उत्तराखण्ड यूथ नेटवर्क युवाओं के एक मंच के रूप में उत्तराखण्ड राज्य में युवाओं के बीच विभिन्न पर्यावरणीय और सामाजिक मुददों पर सक्रियता के साथ काम कर रहा है। इस वर्श भी नेटवर्क द्वारा विभिन्न गतिविधियां आयोजित की गई।

यूथ नेटवर्क की राश्ट्रीय सम्मेलन में भागीदारी

नेषनल यूथ कन्वेंषन के लिए अल्मोड़ा और देहरादून में युवाओं की दो कार्यषालाएं आयोजित कर स्थानीय पारिस्थितिकी के संकट, बच्चों पर उसके प्रभाव पर उनकी समझ को और विकसित किया गया। इसी दौरान अल्मोड़ा और देहरादून से संयुक्त रूप से 7 युवाओं ने वर्धा में आयोजित राश्ट्रीय युवा सम्मेलन में प्रतिभाग किया। नवम्बर 2016 को आयोजित इस अधिवेषन में उत्तराखण्ड राज्य की प्रदर्षिनी, नाटक और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियों को खूब सराहा गया।

वश्व पर्यावरण दिवस (2016–17)

उत्तराखण्ड यूथ नेटवर्क द्वारा चौखुटिया विकासखण्ड में एक दिवसीय युवा सम्मेलन आयोजित किया गया जिसमें कार्यक्षेत्र के 170 युवाओं ने प्रतिभाग किया। इस मौके पर चौखुटिया में बच्चों ने एक रैली कर पर्यावरण जागरूकता का संदेष दिया। बच्चों ने पौधरोपण, प्राकृतिक स्रोत्तों की स्वच्छता व संरक्षण, पॉलीथीन उन्मूलन, व नदी बचाने का संदेष दिया। इसके पष्चात बच्चों ने विकासखण्ड कार्यालय में एक गोश्ठी कर पर्यावरणीय विशयों पर चर्चा की गई।

कृषि आजीविका संवर्धन

ार्य क्षेत्र के गांवों में कृशि आधारित आजीविका के संवर्धन के लिए अमन द्वारा वर्श 2016–17 में निम्न पहल की गई। इसमें जल संरक्षण, जल संवर्धन, जैविक, खाद निर्माण, ऊर्जा संरक्षण, परम्परागत बीज संरक्षण, आदि विशयों पर काम किया गया। पेयजल स्रोत्तों में पानी की कमी से जूझ रहे कार्यक्षेत्र के गांवों में जल संरक्षण के लिए समय समय पर विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम संचालित करने के साथ जल संरक्षण के लिए संस्था द्वारा निम्नलिखित कार्य संचालित किए जा रहे हैं–

जल संरक्षण

कार्यक्षेत्र के गॉवों में जल संरक्षण संस्था का एक प्रमुख विशय रहा है। इस संवेदनषील पर्यावरणीय मुददे पर क्षेत्र के गॉवों में बीते अध्ययनों से यह स्पश्ट है कि क्षेत्र के गॉवों में पलायन का एक प्रमुख कारण पानी की अनउपलब्धता है। पेयजल की कमी, जल स्रोत्तों व नदियों के घटते जल स्तर से ग्रामीण जन जीवन अत्यधिक प्रभावित हुआ है। पानी जुटाने का ग्रामीणों विषेशकर महिलाओं व बच्चों पर अत्यधिक कार्यबोझ का दबाव रहता है। गॉव की खेती, आर्थिक, सामामाजिक गतिविधियां सभी पानी की कमी से प्रभावित होती है। ग्रामीण बीते वर्शों

की गतिविधियों से जल संरक्षण की चेतना से लैस हो चुके हैं। किसान संगठन हो या महिला संगठन, ग्रीन क्लब हों अथवा यूथ क्लब सभी ने अपने अपने क्षेत्रों में पौधरोपण, वर्शा जल संग्रहण के विभिन्न उपचारों को अपनाया है। क्षेत्र के गॉवों में जल संरक्षण के लिए जहां व्यापक स्तर पर ट्रेंच, कंटूर नालियों का खुदान, वृक्षारोपण, वर्शा जल संग्रह टेंक स्थापित किए गए हैं वहीं बड़ी संख्या में रूफ वाटर टैंक भी लोगों की ओर से लगाए गए हैं। इसके अतिरिक्त गॉवों गॉवों में जल स्रोत्तों के संरक्षण के लिए ग्रामीण समुदाय आगे आया है।

जल स्रोत्तों का संरक्षण और जीर्णोधार

इस कार्य के तहत संस्था ने सम्बंधित ग्रामीणों के साथ फरवरी माह में चार दिवसीय ग्राम स्तरीय प्रबंधन की बैठकें की तथा विशेशज्ञों के साथ क्षेत्र के 10 जल संकटग्रस्त जल स्रोत्तों का चयन किया।

फरवरी माह से जून माह तक निरंतर इन जल स्रोत्तों में पानी की माप की गई और उसी के अनुरूप इन संकटग्रस्त जल स्रोत्तों को पुर्नजीवित करने के लिए कंटूर नालियों, जल भराव गड़ढ़े, व तालाब आदि खोदने का काम शुरू किया।

क्षेत्र के 8 गॉवों में इस वर्श 37 गैबियन स्थापित गए। क्षेत्र में अब तक बनाए गए कुल गैबियनों की सं ख्या 37 हो गई है। पहाड़ी ढलानों में भू–कटाव को रोकने , जल स्रोत्तों के संरक्षण और मृदा को बचाने तथा गॉव की खेती को भू–कटाव से प्रभावित होने से रोकने के लिए बनाए गए ये सभी गैबियन सुरक्षित हैं और अपने उद्देष्यों पर खरे उतर रहे हैं। समुदाय के सहयोग से बनाए गए इन गैबियनों का रखरखाव ग्रामीण करते है तथा क्षेत्र में इन्हें अधिक संख्या में बनाए जाने की मॉग ग्रामीण कर रहे हैं।

खाल व वर्शा जल संरक्षण टैंकों का निर्माण

जल संग्रहण के लिए क्षेत्र के गॉवों में खाल, जल संग्रहण टैंक व वर्शा जल संग्रहण टेंक स्थापित किए गए है।

जल संग्रहण के लिए क्षेत्र के कार्यक्रमाच्छादित गॉवों में खाल निर्माण किए जा चुके है। इस वर्श 13 नए खालों का निर्माण कराया गया। समुदाय की मॉग पर अनेक जल स्रोत्तों के आसपास भी इन खालों का

नौगांव का बदलता परिदृश्य

गॉव को भू-कटाव के प्रभाव से बचाने और जल स्रोत्तों के संरक्षण के उद्देश्य से संस्था द्व ारा कार्यक्षेत्र के नौगांव को चुना गया। इस गॉव में ३३ हेक्टेअर से अधिक उपजाऊ कृषि भूमि हर वर्ष भू-कटाव का शिकार होती थी। उत्पादन की दृष्टि से उपजाऊ इस गॉव में पानी के परम्परागत स्रोत्तों पर भी संकट था। संस्था की ओर से गॉव से सटी पहाड़ी की खाई में जहां हर वर्ष बरसात में बड़े बोल्डर आकर बड़ा नुकसान करते थे के उपचार की योजना बनाई गई।

लगभग ६०० मीटर के इस हिस्से में तकनीकी परीक्षण के बाद गैबियन और प्लम बनाए गए। इस गधेरे में पूर्व में गैबियनों के न टिकने की बात ग्रामीणों ने कही और बताया पूर्व में भी कुछ विभागों की ओर से यहां गैबियन बनाए गए थे जो नहीं टिके। संस्था की ओर से इस गधेरे में पानी के तीव्र कटाव को रोकने के उद्देश्य से दो फेज में २६ गैबियन बनाए गए जिसमें सीमेंट और कंकरीट के प्लम और गैबियन सम्मिलित थे। बीते ७ -८ माह में दो बरसात के मौसम बीत जाने के बाद भी न केवल यह ढॉचे सुरक्षित है वरन् क्षेत्र में भू -कटाव भी पूरी तरह से रूक गया है। आस पास लोगों द्वारा छोड़ी गई खेती पुनः शुरू होने लगी है और इस क्षेत्र में वनस्पति भी पुनः उगने लगी है। क्षेत्र की जैव विविधता में होने वाले परिवर्तनों का संस्था की ओर से अध्ययन किया जा रहा है और इस काल में गैबियनों के सुरक्षित होनें से ग्रामीण खुश है। गॉव को पानी देने वाला यह क्षेत्र आने वाले दिनों में एक स्थायी जल निकासी क्षेत्र बनेगा इसकी पूरी उम्मीद है। पहाड़ी में इस उपचार के बाद ग्रामीणों के जल स्रोत्तों में भी सुधार आया है और ग्रामीणों को यह लगता है कि अब उन्हें पानी के लिए अन्य किसी और पर निर्भर नहीं रहना पड़ेगा। गॉव की इस पहाड़ी में ट्रेंच खोदने, वृक्षारोपण करने व वर्षा जल संग्रहण टेंक खोदने आदि का कार्य भी जारी है जिससे संपूर्ण गॉव क्षेत्र में जैव विविधता व जल संरक्षण की स्थिति में सुध ार आया है आने वाले दिनों में इसके सकारात्मक परिणाम दृष्टिगोचर होंगे।

निर्माण कराया गया। वन क्षेत्र में बनाए गए इन खालों से जहा जमीन में पानी का रिचार्ज होता है वहीं, मवेषियों के लिए भी इसका पानी उपयोग में लिया जाता है। पहाडी ढलानों में नमी पैदा कर ये खाल वहां घास व पौधों के लिए भी नमी पैदा करने में सहायक हो रहे हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में जल संरक्षण के उद्देष्य से बनाए जा रहे वर्शा जल संरक्षण टेंकों का निर्माण कार्य इस बार भी जारी रहा। इस वर्श क्षेत्र के 5 गॉवों में 7 वर्शा जल संरक्षण टेंकों का निर्माण किया गया। ये वर्शा जल संरक्षण टेंक जहां क्षेत्र में जल संरक्षण में सहायक हैं वहीं भूमिगत जल की मात्रा को भी बढ़ाने तथा पर्वतीय ढलानों में नमी बनाने तथा जैव विविधता को बढ़ाने में यह सहायक हो रहे हैं। क्षेत्र के गॉवों में दो दर्जन से अधिक परिवार इन 2 से 3 हजार लीटर जल क्षमता वाले टेंकों से अपने घरों के आसपास साग–सब्जी उत्पादन करते हैं। गर्मी के दिनों में सिंचाई के लिए ये टेंक अत्यंत सहायक हो रहे हैं।

वहीं क्षेत्र के गॉवों में औसत 20 परिवार प्रति गॉव की दर से 200 से अधिक वर्शा जल संग्रहण टैंक ग्रामीणों के घरों में स्थापित हो चुके है। पालंगबाड़ी जैसे गॉव इन वर्शा जल संग्रहण टेंकों पर पूरी तरह निर्भर है। इन टैंकों में औसत 9 लाख लीटर से अधिक पानी एकत्र होता है। ग्रामीणों की छतों में वर्शा में एकत्र जल मकान के नीचे स्थापित टेंकों जमा होता है जिसे वे पीने के अतिरिक्त अन्य घरेलू कार्यों में बहुतायत प्रयोग करते हैं। महिलाओं के कार्यबोझ को भी ये वर्शा जल संग्रहण टैंक कम कर रहे हैं।

वृक्षारोपण

क्षेत्र में इस वर्श भी पौधरोपण के लक्ष्य को आगे बढ़ाते हुए 13115 और पौध लगाए गए। कार्यक्षेत्र के समुदाय से चर्चा के बाद विभिन्न गॉवों में चौड़ी पत्ती प्रजाति जैसे अखरोट, बॉज, काफल, तेजपत्ता, बेलपत्री, क्वैराल,.और नींबू प्रजाति के पौधों का रोपण किया गया। इसमें चौड़ी पत्ती के प्रजाति व नींबू, संतरा, छोटा नींबू आदि प्रमुख थे। ग्रामीणों ने इस वर्श भी अपनी निजी व सामूहिक भूमि पर पौधों का रोपण किया। बीते वर्श के वृक्षारोपण का संरक्षण करते हुए ग्रामीण नई पौध का संरक्षण भी कर रहे हैं।

पर्वतीय कृषि के अनुरूप कृषि सहायताओं का विकास

कंपोस्ट पिट

क्षेत्र के विभिन्न गांवों में जैविक कृशि को बढ़ावा देने और महिलाओं पर काम के दबाव को कम करने तथा कृशि उत्पादन में बढ़ोत्तरी के उद्देष्य से बनाए जा रहे कंपोस्ट पिटों के निर्माण कार्य में वृद्धि हुई। क्षेत्र में अब तक 192 से अधिक कंपोस्ट पिट स्थापित हो चुके है। ग्रामीण महिलाएं अब इन कंपोस्ट पिटों का पूरी तरह से उपयोग करने लगी है। घरों में कच्ची खाद को वे इन पिटों में डालकर तैयार होने पर खेतों में डालती है। ग्रामीण महिलाओं के अनुसार कंपोस्ट खाद के प्रयोग से न केवल उनका कृशि उत्पादन बढ़ा है वरन् खेतों में कीट प्रसार भी कम हुआ है। विभिन्न प्रषिक्षणों में उन्हें जैविक व वर्मी कंपोस्ट की उपयोगिता के साथ रासायनिक खाद के दुश्प्रभावों को भी बताया गा। अध्ययन में सामने आया कि 182 से अधिक परिवार प्रतिवर्श 25 हेक्टेएर से अधिक भूमि में लगभग 5 हजार कुंतल से अधिक जैविक खाद का छिड़काव करने लगे हैं। जबकि ये परिवार 9 हजार कुंतल से अधिक कंपोस्ट खाद वर्श भर में तैयार कर लेते हैं। इसके परिणाम स्वरूप खेती व साग–सब्जी उत्पादन में महिलाओं ने पूर्व की तुलना में अधिक बढ़ोत्तरी को देखते हुए अब जैविक उत्पादन को अपनाने की बात कही। ताल क्षेत्र में महिलाओं ने बताया कि अब वे अपने क्षेत्र में रसायानिक खादों का उपयोग नहीं करते। जैविक उत्पादन की पोशण क्षमता और बीज, फलों तथा सब्जी अन्य उत्पादों के टिकाऊपन के महत्व को भी ग्रामीण महिलाएं समझ चुकी है। इधर सरकार की ओर से भी इसी मॉडल पर काम करते हुए विभिन्न विकासखण्डों में दो गॉवों को जैविक गॉव बनाने का अभियान चलाया जा रहा है और प्रदेष सरकार ने जैविक गॉवों के उत्पादनों को अधिक कीमत पर खरीदने व प्रोत्साहित करने की बात कही है।

किसान सहायता केंद्र

सामुदायिक विमर्श और भागीदारी, आजीविका संवर्द्धन के विचार और गतिविधियों के धरातलीय क्रियांन्वयन की एक महत्वपूर्ण कड़ी है किसान संगठन। ये संगठन स्थानीय स्तर पर परंपरागत खेती के संरक्षण, संवर्द्धन, कृशि उत्पादन को बढ़ावा देने, उत्पादन व विपणन की प्रक्रियाओं को संचालित करते हैं। इस वर्श 274 किसान इन समूहों से जुड़े। जैविक खाद निर्माण व उपयोग, बीजों के उत्पादन, वितरण आदि के प्रषिक्षण इस वर्श भी उन्हें दिए गए।

बीज बैंकों की स्थापना

बीज समिति

गांव स्तर पर गठित सामुदायिक संगठन जो न केवल परम्परागत बीजों को बचा रहे हैं वरन् अधिक उत्पादकता वाले बीजों का प्रसार भी कर रहे हैं। परियेाजना क्षेत्र के 10 गॉवों में किसान विषेशकर महिलाएं पारंपिक बीजों के उत्पादन, संरक्षण और आदान प्रदान जैसी गतिविधियां संचालित करते हैं। संस्था द्वारा प्रत्येक बीज बैंकों को 16 बीज कंटेनर और तराजू भी दिए गए।
इस वर्श 265 किसानों ने इन बीज बैंकों से बीज खरीदा तथा 215 किसानों ने घरों पर बीज संरक्षित किया जबकि बड़ी संख्या में किसानों ने बीजों का आपस में लेन देन किया। क्षेत्र में विलुप्त हो रहे बीजों की प्रजाति को भी संस्था द्वारा लाकर किसानों को दिया गया।

महिला कार्यबोझ में कमी और वैकल्पिक ऊर्जा का विकास

सोलर कूकर और बायोगैस संयंत्र बने ग्रामीणों की जरूरत–

ग्रामीण क्षेत्रों में वनों पर दबाव को कम करने, कार्बन रहित उर्जा के उपयोग और करने के उद्देष्य से क्षेत्र में जहां बायोगगैस स्थापित किए जा रहे हैं वहीं सोलर कूकरों का इस वर्श भी वितरण किया गया। क्षेत्र के 10 गॉवों में इस वर्श 141महिलाओं को 141 नए सोलर कूकर वितरित किए गए जबकि 38 नए घरों में बायोगैस संयंत्र स्थापित किए गए। बड़ी संख्या में ग्रामीण महिलाएं अपने दिन के भोजन बनाने के लिए सोलर कूकरों का प्रयोग कर रही है। वहीं एआरटीआई पूना की सफलतम तकनीक से बने घरेलू कचरे पर आधारित बायोगैस संयत्र भी ग्रामीणों के लिए अत्यंत सहायक हो रहे हैं। हमारे अध्ययन में यह स्पश्ट हुआ कि हर ग्रामीण प्रतिदिन औसत 50 मिनट इन बायोगैसों का प्रयोग कर प्रतिवर्श 5 से 6 कुंतल लकड़ी का बचत करता है। इससे महिलाओं और बच्चों के कार्यबोझ में भी परिवर्तन देखा गया है।

आधुनिक घराटों की स्थापना

क्षेत्र में परम्परागत घराट (जल चक्की) स्थापित करने की योजना पर काम करते हुए इस वर्श भैंसीगाड़–धनाड़ व जुकानी में दो परम्रागत घ ाराटों को आधुनिक व बहुपयोगी बनाया गया। वर्तमान में 95 परिवार इन घराटों से लाभान्वित हो रहे है। पूर्व में परम्परागत घराट जिनकी कार्य क्षमता एकल और कम थी जो अब बहुपयोगी व अधिक कार्यक्षमता के बन गए है। हेस्को देहरादून के तकनीकी सहयोग से इन घराटों में लौह पैनल लगाकर न केवल इसमें अब बिजली उत्प. ादन हो रहा है वरन् गेहूँ पिसाई, धान पिराई और मसाला पिसाई के काम ये घराट कर रहे हैं। पूर्व घ ाराटों की तुलना में अब इनकी क्षमता भी दो गुनी से अधिक हो गई है। भविश्य में यहां उत्पादित बिजली का उपयोग अन्य ग्रामीणों के लिए करने के साथ इन घराटों के हैड में पानी टैंक स्थापित मछली पालन को भी प्रोत्साहित करने की योजना है।

षिक्षा सहायता केंद्र

दौलाघट क्षेत्र में गोंविंदपुर क्षेत्र में वर्तमान में संचालित 5 शिक्षा सहायता केंद्र बच्चों को खेल खेल में शिक्षा से जोड़ने, विभिन्न विशयों में उनका सहयोग करने और उनके रचनात्मक विकास को आगे बढ़ाने का कार्य जारी है। इस वर्श बच्चों की रचना. त्मकता बढ़ाने के लिए अनेक अभिनव प्रयोग किए गए। वर्तमान में 152 से अधिक बच्चे सीधे इन शि क्षा केंद्रों से जुड़े हैं। स्थानीय स्तर पर स्कूलों में शिक्षकों के अभाव के कारण ये केंद्र बच्चों की स्कूली शिक्षा में भी अत्यंत सहायक हो रहे हैं। आगामी दिनों में खेल व टीएलएम की नई सामग्री से इन केंद्रों को और सुसज्जित करने की योजना है।

पुस्तक केंद्र व पुस्तकालय

गोविंदपुर क्षेत्र में वर्तमान में विभिन्न गॉवों में 7 पुस्तकालय संचालित है। जबकि धौलादेवी में 1 व चौ खुटिया में 2 पुस्तकालयों में गांव के युवाओं बच्चों की अभिरूचि और आवश्यकताओं के अनुरूप विभिन्न पुस्तकों और पत्र पत्रिकाओं व शब्दकोश आदि का यहां संग्रहित किया गया है। वर्तमान में बच्चे यहां आकर आकर पुस्तकों का अध्ययन करते हैं। ग्रामीण एवं बच्चे घरों में इन पुस्तकों को ले जाकर भी पढ़ते हैं। पुस्तकालयों की स्थापना के बाद क्षेत्र में बच्चों में पठन पाठन की अभिरूचियां बढ़ी है। इस वर्श देखा गया कि बच्चों में लेखन की अभिरूचि में भी गुणात्मक सुधार आया है। इस वर्श 10 पुस्तकालयों में स्थानीय ग्रामीण सहित बच्चों की 469 संख्या पुस्तकालयों से जुड़ी।

कंप्यूटर षिक्षा केंद्र

कंप्यूटर की आधुनिक और तकनीकी शिक्षा से ग्रामीण बच्चों को जोड़ने के उद्देश्य से गोविंदपुर क्षेत्र स्थापित कंप्यूटर प्रशिक्षण केंद्र में पॉचवा बैच सफलतापूर्वक कंप्यूटर प्रशिक्षण ले रहा है। इस दौरान

ग्रामीण बालिकाओं ने कंप्यूटर बेसिक कोर्स को सीखने में अधिक रूचि दिखाई। स्थानीय स्तर पर छोटे बड़े रोजगार के लिए भी युवाओं ने इस केंद्र से जुड़कर कंप्यूटर में दक्षता हासिंल करने पर जोर दिया। कक्षा 9 से कालेज व तकनीकी शिक्षा लेने वाले दर्जनों बच्चे इस केंद्र का लाभ ले रहे है। प्रयोगात्मक और सैद्ध ांतिक दोनों प्रकार की शिक्षा बच्चों को यहां प्रशिक्षकों द्व ारा दी जाती है। क्षेत्र के विभिन्न गांवों में यहां बालक और बालिकाएं नियमित कंप्यूटर शिक्षा लेने आते हैं। आगामी दिनों में इस केंद्र को और अधिक सुविधाओं से जोड़कर पाठ्यक्रम में विस्तार की योजना है। बीते वर्श 88 से अधिक बच्चों ने इस केंद्र से कंप्यूटर दक्षता परीक्षा उत्तीर्ण की।

निर्धन वर्ग छात्रवृत्ति

वचिंत श्रेणी के चयनित बच्चों की शिक्षा जारी रखने के लिए अमन द्वारा वर्श वर्श 2016–17 में 40 बच्चों को यह छात्रवृत्ति प्रदान की गई। इस सहायता के तहत कक्षा 3 से 12 तक के बच्चों को कापियां, जूते, मोजे, स्कूल बैग, पुस्तकें, स्कूल फीस आदि की सहायता दी जाती है। गोविंदपुर क्षेत्र के 7 गॉवों के 40 बच्चों को नियमित यह सहायता दी जा रही है जिसमें निर्धन व जरूरतमंद तबके की 26 बालिकाएं और 14 बालक सम्मिलित हैं।

बाल संगठन

बाल संगठनों का गठन गांव स्तर पर 5 से 18 साल के बच्चों को लेकर किया गया है। ये संगठन बाल विशयों, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, पारिस्थिकीय बाल अधिकारों, आदि विशयों पर कार्य करते हैं। बच्चों की अभिव्यक्ति बढ़ाना, उनकी शिक्षा, स्वास्थ्य, न्याय, रचाना. त्मकता बढाने व जागरूकता बढ़ाने जैसे विशयों पर कार्य कर रहे हैं।

बाल मेला

गोविंदपुर क्षेत्र में जून माह में वृहद बाल मेले का आयोजन किया गया। क्षेत्र के 270 से अधिक बच्चों ने इस बाल

मेले में भागीदारी की। बच्चों की रचनात्मक प्रतिभाग को आगे लाने, खेल आयोजन, सांस्कृतिक आयोजन, बच्चों की पर्यावरणीय विशयों, बाल अधिकारों, स्वच्छता, लेखन, कला आदि की प्रतिभाओं को इस बाल मेले में आगे बढ़ाया गया तथा विभिन्न प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गई।

शैक्षिक भ्रमण

शैक्षिक भ्रमण के तहत गत वर्श जून 2016 को बच्चों को अल्मोड़ा के प्रसिद्ध पर्यटक और ऐतिहासिक स्थली कौसानी का भ्रमण कराया गया। अनाशक्ति आश्रम कौसानी ने बच्चों ने गॉधीवादी विचारों पर केंद्रित सामाजिक गतिविधियों को समझा सुमित्रानंदन पंत संग्रहालय का भी भ्रमण किया। 56 बच्चों ने इस भ्रमण में प्रतिभाग किया। वहीं अक्टूबर 2016 में 29 बच्चों ने कोसी बैराज, गोविद बल्लभ पंत पर्यावरण एवं विकास संस्थान कोसी तथा भारत तिब्बत सीमा बल के कार्यालय का भ्रमण कर वहां से अनेक जानकारियां एकत्र की। ग्रामीण बच्चों ने कौसानी में जहां ऐतिहासिक दस्तावेजों व प्रतीकों को देखा वहीं कोसी बैराज की कार्यप्रणाली को समझा तथा जीबीपंत पर्यावरण संस्थान में वैज्ञानिक गतिविधियों को जाना तथा आईटीबीपी के जवानों व अधिकारियों से बातचीत कर भारतीय सैन्य बलों की कार्यपद्धति को समझा।

प्रकाषन

इस वर्श बच्चों का अखबार नियमित प्रकाषित हुआ। अपनी दुनिया बच्चों के अखबार के चार त्रैमासिक अंक प्रकाषित किए गए और बच्चों की मॉग पर वन्य जीवों व कृशि खरपतवारों की नई श्रृंखल अखबार में प्रकाषित किए गए। इसके अतिरिक्त बच्चों के सहयोग से विष्व खेल दिवस, ग्लोबल एक्षन मंथ, आदि अभियानों के स्टीकर भी प्रकाषित किए गए।

दानदाता एवं सहयोगी

संस्थागत दानदाता

टीडीएच जर्मनी, ट्रांस हिमालयन एडस सोसायटी कनाडा

सहयोगी संस्थाएं और संगठन

हैक्सो देहरादून, ग्लोबल हेल्थ इनिष्येटिव, पीस, नेषनल आरटीई फोरम, विमर्ष नैनीताल, माउण्ट वैली, केयर नई दिल्ली, उत्तराखण्ड राज्य बाल आयोग, सीएसीएल, ग्राविस, सीड सुनाड़ी, मि॰ हला एकता परिशद, कुमाऊं वाणी, ग्राम्य पर्यावरण षिक्षण समिति, सुंदर ट्रस्ट, यूडीआई, जन जागृति संस्था, बाल विद्या मंदिर, ग्राम्य विकास षिक्षण समिति गोपेष्वर, हिमाद गोपेष्वर, डालियों के दगड़िया श्रीनगर, राज्य प्राथमिक षिक्षक संगठन, माध्यमिक षिक्षक संगठन, आदि सभी संस्थाओं के सहयोग के लिए हम आभारी है।

डॉ जे एस मेहता, डॉ जे एस रावत, प्रो0 विरेंद्र पैन्यूली, डॉ के के उप्रेती, डॉ ए पी ध्यानी, सुरेष बलौदी, षैलेंद्र कुमार, अमरीष राय, विनोद कुमार, के0 माधो सिंह, बाल दत्त तिवारी, जसी राम, उमराव सिंह नेगी, बहादुर राम, सुरेष नौटियाल, सावित्री भटट, सुमन कन्नौजिया, नरोत्तम जोषी, डॉ रेखा जोषी, विनीता पाठक, डॉ षमषेर सिंह बिश्ट, प्रो0 इला साह, प्रेम सिंह सनवाल, डी0के0कंसवाल, अरंण्य रंजन, कुसुम घिल्डियाल के सहयोग और मादर्षन के लिए हम उनके आभारी है।

आभार

डॉ सिराज अनवर, षर्मिश्ठा चौधरी, किषोर झा, सुरभि मालवीय, इंग्रिड मेंडोसा, सी जे जॉर्ज, डेफनी हॉल्स, अनील चौधरी, संजीव सिंह, षहनाज परवीन, के हम विषेश रूप से आभारी है, जिनका हमें सतत् विषेश मार्गदर्षन मिला।

अमन उत्तराखण्ड

ईश्वरी भवन
रानीधारारोड अल्मोड़ा
Phone –05962-231182

www.amanuttarakhand.org